International Indexed & Refereed Research Journal, February, 2013 ISSN 0975-3486, (Print) , E- ISSN – 2320-5482 ,RNI –RAJBIL- 2009-30097, VOL- IV * ISSUE- 41

शोध पत्र- समाजशास्त्र

महिला कृषि श्रमिकों की राजनैतिक जागरूकता

* डॉ. दीपिका गुप्ता

* मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, कोलार रोड़, भोपाल

February,2013

शास्त्रीय अर्थों में राजनीति को राज्य की नीति के रूप में निरूपित किया जाता था । बीसवीं शताब्दी के पांचवे दशक डेविड ईस्टन द्वारा लिखित पुस्तक ''द पोलिटिकल सिस्टम'' में उन्होंने राजनीति को ''शासक और शासित के मध्य पाये जाने वाले संबंधों के रूप में निरूपित किया है ।राजनीति का यही केन्द्र बिन्दु है कि यह सृष्टि के सुक्ष्मतम सत्य बिन्दु से लेकर वृहन्तम बिन्दु तक जाती है । इसीलिए महिला कृषि श्रमिकों की राजनीति संचेतना जानने हेतु प्रस्तुत अध्याय में उनसे संदर्भित तथ्य संकलन को विश्लेषित करने का प्रयत्न किया है ।

भोपाल जिले के दो विकासखंड बैरसिया व फंदा के पॉच–पॉच गांव से लगभग 300 महिला कृषि श्रमिकों का चयन किया गया एवं उनसे उपरोक्त विषय पर साक्षात्कार द्वारा जानकारी प्राप्त की गई । प्राप्त निष्कर्षों के अनुसार शिक्षा के प्रसाद के फलस्वरूप इन क्षेत्रों में महिला साक्षरता दर बढ़ी है।

उद्देश्य–

1. उत्तरदाताओं की राजनैतिक जागरूकता के स्तर की जानकारी प्राप्त करना ।
2. उत्तरदाताओं की राजनीति में नेतृत्व की प्रक्रिया में सहभागिता का अनुशीलन करना ।

3. उपकल्पना–

1. उत्तरदाताओं की राजनैतिक जागरूकता उनकी कमजोर आर्थिक व व्यावसायिक स्थिति के कारण प्रायः निम्न होगी।
2. उत्तरदाताओं की राजनैतिक सहभागिता समयाभाव तथा घर की जिम्मेदारियों के कारण नगण्य होगी ।

3. अध्ययन पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन भोपाल जिले के ग्रामीण क्षेत्र को आधार बनाकर किया गया है । भोपाल जिले के ग्रामीण अंचल के दो विकासखंड बैरसिया तथा फन्दा का चयन कर उनमें पांच–पांच गांव लिये गये हैं । प्रत्येक गांव से महिला कृषि श्रमिकों की संख्या का प्रतिनिधित्व का पूर्ण चयन किया गया है। इस प्रकार उत्तरदाताओं की संख्या करीब 300 हुई । इसके लिए वैव निदर्शन की क्रमांक सूची प्रणाली का उपयोग किया गया है । तत्पश्चात् साक्षात्कार पद्धति द्वारा जानकारी एकत्रित की गई है, इसके प्श्चात् अवलोकन पद्धति द्वारा निश्चित उद्देश्य के तहत प्रलेखन की व्यवस्था की गई । प्रस्तुत अध्ययन हेतु असहभागी अवलोकन का प्रयोग किया गया है। अंत में साक्षात्कार तथा अवलोकन विधियों से प्राप्त प्राथमिक एवं द्वितीयक तथ्यों का विश्लेषण तथा व्याख्या की गई है।

विश्लेषण तथा व्याख्या–

महिला कृषि श्रमिकों की राजनीतिक जागरूकता जानने के लिए जब उनसे प्रश्न किए गये तो वे सीधे कहती हैं– घर तथा बाहर की जिम्मेदारियों के बाद इन सबके लिए समय ही नहीं बचना है । फिर भी जागरूकता तथा समयाभाव का फर्क बताकर उनसे कुछ प्रश्न पूछे गये जिनका विश्लेषण इस प्रकार है :–

तालिका क्रमांक 1.1
उत्तरदाताओं द्वारा चुनाव किये गये मतदान

क्रमांक	चुनाव में मतदान	संख्या	प्रतिशत
1	पंचायत	300	100
2	विधानसभा	300	100
3.	लोकसभा	291	97

उत्तरदाता महिलाओं द्वारा पंचायत एवं विधानसभा चुनाव में शतप्रतिशत मतदान किया गया जबकि मात्र 97 प्रतिशत महिला श्रमिकों द्वारा लोकसभा चुनाव में मतदान किया गया । इन चुनावों के लिए होने वाली सभाओं में शामिल होने के बारे में पूछे गये प्रश्न का विश्लेषण इस प्रकार है –

तालिका क्रमांक 1.2
उत्तरदाता द्वारा चुनाव सभाओं में दर्शक/श्रोता के रूप में शामिल होना

क्रमांक	चुनाव सभाओं में शामिल होना	संख्या	प्रतिशत
1	हॉ	50	17

उत्तरदाताओं में मात्र 17 प्रतिशत महिलाएँ ही चुनावी सभाओं में श्रोता के रूप में शामिल हुई हैं । शेष 83 प्रतिशत महिलाएँ सभाओं में जाना तो चाहती है किन्तु जिम्मेदारियों का बोझ उन्हें रोक देता है । जिसे वे निष्ठापूर्वक मानकर काम में लगी रहती है । महिला कृषि श्रमिकों की राजनीतिक जागरूकता का स्तर जानने के लिए भी उनसे बातचीत हुई । जिसका विवरण इस प्रकार है –

तालिका क्रमांक 1.3 राजनीतिक दलों के चुनाव चिन्ह की जानकारी

क्रमांक	राजनीतिक दलों के चुनाव चिन्ह की जानकारी	संख्या	प्रतिशत
1	भाजपा	290	97
2	कांग्रेस	133	45
3.	बसपा	06	02

ग्रामीण कृषि महिला श्रमिकों की राजनीतिक जागरूकता के लिए जब चुनाव चिन्हों के बारे में बात की गई तो पाया की 97 प्रतिशत महिलाओं को भाजपा का चुनाव चिन्ह मालूम है जबकि 45 प्रतिशत महिलाओं को कांग्रेस का चुनाव चिन्ह मालूम है । मात्र 02 प्रतिशत महिलाऐं ही बसपा का चुनाव चिन्ह जानती थी । इसमें से कुछ महिलाऐं एक से अधिक राजनीति दलों के चुनाव चिन्हों की जानकारी भी रखती हैं । 04 महिलाऐ तो ऐसी थी जो कि करीब–करीब सभी मुख्य राजनीतिक दलों के चिन्हों को पहचानती हैं। पढ़ी–लिखी भी हैं । इनके पास ज्ञान तथा भाषा दोनों हैं किन्तु मात्र समयाभाव तथा घर की जिम्मेदारियॉ इन्हें राजनीति में आने से रोकते हैं ।

अतः ग्रामीण महिला कृषि श्रमिक की राजनीति में नेवृत्व की प्रक्रिया में सहभागिता नगण्य ही रहती है हालाकि जागरूकता के मामले में इन्हें कहीं से भी कम नहीं कहा जा सकता है । सहभागिता के अंतर्गत निष्कर्ष में कह सकते हैं कि महिला कृषि श्रमिक पंचायत चुनाव तथा विधान सभा चुनाव में तो बहुत बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेती हैं किन्तु लोकसभा चुनाव में महिलाओं का झुकाव अपेक्षाकृत कम होता है ।

अतः निष्कर्षतः कह सकते हैं कि ग्रामीण कृषि महिलाओं की राजनीति के क्षेत्र में गतिशीलता बहुत सीमित रही है । यद्यपि उनमें राजनीतिक जागरूकता बढ़ी है परन्तु नेतृत्व में सहभागिता के प्रयास नगण्य होने से उनमें राजनीतिक गतिशीलता का लगभग अभाव ही है ।

निष्कर्ष –

- महिला कृषि श्रमिकों के पास समय का अभाव रहता है क्योंकि ये घर तथा बाहर की दोहरी जिम्मेदारियॉ निभाती हैं । यही समयाभाव ही इनकी राजनीतिक प्रत्यक्ष सक्रियता तथा सहभागिता नगण्य होने का प्रमुख कारण है, परन्तु निदर्श में शत–प्रतिशत महिला कृषि श्रमिकों का पंचायत एवं विधानसभा चुनावों में श्शामिल होना उनकी राजनीतिक जागरूकता को दर्शाता है।
- निदर्श में मात्र 17 प्रतिशत महिला कृषि श्रमिक ही चुनावी सभाओं में दर्शक के रूप में शामिल हुई हैं । शेष 83 प्रतिशत सभाओं में जाना तो चाहती हैं किन्तु जिम्मेदारियों के चलते विभिन्न प्रकार के कामों में लगी रहती हैं । अतः सभाओं में जाने का समय नहीं निकाल पाती ।
- निदर्श में 97 प्रतिशत महिला कृषि श्रमिकों को भाजपा का चुनाव चिन्ह मालूम जबकि कांग्रेस का चुनाव चिन्ह मात्र 45 प्रतिशत महिला कृषि श्रमिक पहचानती हैं । 04 महिला कृषि श्रमिक तो करीब–करीब सभी राजनैतिक दलों के चुनाव चिन्हों को पहचानती हैं । ये सब आंकड़े इनकी राजनैतिक जागरूकता को दर्शाते हैं ।
- महिला कृषि श्रमिकों की राजनीति के क्षेत्र में गतिशीलता बहुत सीमित रही है, यद्यपि उनमें राजनैतिक जागरूकता बढ़ी है परन्तु नेतृत्व में सहभागिता के प्रयास नगण्य होने से उनमें राजनैतिक गतिशीलता का लगभग अभाव ही है।

संदर्भ ग्रंथ

1 जनसंपर्क विभाग, म.प्र.शासन. आगे आये लाभ उठाये, ऐक्सिस एण्ड प्रिन्ट मीडिया, मुम्बई, 2006.
2 जिला सांख्यिकी कार्यालय, भोपाल, जनपद पंचायत बैरसिया के प्रमुख आंकड़े–2006, संभागीय योजना एवं सांख्यिकी कार्यालय, भोपाल
3 जिला सांख्यिकी कार्यालय, भोपाल. जनपद पंचायत फंदा के प्रमुख आंकड़े–2006, संभागीय योजना एवं सांख्यिकी कार्यालय, भोपाल
4 श्रम जगत, वी.वी. गिरी राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नोयड़ा, जुलाई–अगस्त–2001